मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MJY–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम (ज्योतिष)

(एम. ए. जे. वाई.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.जे.वाई.–003 : पञ्चाङ्ग एवं मुहूर्त्त

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभाजित है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए : $3 \times 20 = 60$

(क) ज्योतिषशास्त्र में पञ्चाङ्ग के समग्र विषय को विस्तार से लिखिए।

(ख) करण एवं भद्रा का स्पष्टीकरण करते हुए विस्तार से उल्लेख कीजिए।

(ग) नक्षत्रों की ध्रुवादि विभिन्न संज्ञाओं का वर्णन कीजिए।

(घ) भारतवर्ष में मुद्रित पञ्चाङ्गों की परम्परा का वर्णन कीजिए।

(ङ) व्रत-पर्व एवं उत्सव के दृष्टिकोण से चातुर्मास का वर्णन कीजिए।

(च) अधिकमास एवं क्षयमास का विस्तृत वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

$4 \times 10 = 40$

(क) ज्योतिष दृष्टि से योग किसे कहते हैं ? सत्ताईस योगों के नाम लिखिए।

(ख) उपनयन संस्कार के महत्व पर प्रकाश डालिए।

(ग) विवाह में और उपनयन में त्रिबल शुद्धि विचार का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

(घ) अक्षय तृतीया एवं श्रीरामनवमी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

(ङ) गृहप्रवेश मुहूर्त्त में कलशशुद्धि चक्र सहित मुहूर्त्त निर्णय कीजिए।

(च) वत्स चक्र व द्वार चक्रों की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

(छ) भद्रा निर्णय को स्पष्ट कीजिए।

(ज) श्राद्ध के महत्व पर प्रकाश डालिए।

× × × × ×